

जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन अपनाकर वर्षा संचयन करें किसान

❑ जल की समस्या वर्ष 2050 तक, जलवायु परिवर्तन के साथ पानी की कमी का सामना चुनौतीपूर्ण होगा



कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह

कानपुर, 4 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने कहा कि हमारा देश एवं प्रदेश कृषि आधारित है आज

भी 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आधारित है और कृषि आधारित जल पर जिसमें 70 प्रतिशत सिंचाई भूजल के भरोसे है। इसके लिए हमें सबसे पहले वर्षा जल को संरक्षित

करने भूगर्भ जल बढ़ाने हेतु रिचार्ज बढ़ाने जल स्रोतों का पुनरुद्धार करना होगा। कहा गया कि बिन पानी सब सून। उत्तर प्रदेश में आगरा, बुलंदशहर, फिरोजाबाद, हाथरस, मैनपुरी, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, शामली, संभल, अमरोहा, जौनपुर, प्रतापगढ़, कानपुर नगर एवं कानपुर देहात आदि जनपदों में भू-जल संकट निरंतर बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा जल एवं वायु से ही जलवायु का अस्तित्व है जलवायु परिवर्तन ने जल की समस्या को बढ़ाया है, वनों की कमी पृथ्वी की जल संग्रह संरक्षण क्षमता पर प्रतिकूल असर डालता है परंतु यदि हम खेती की ऐसी तकनीकी प्रबंधन अपनाए जाएं जो जलवायु के लिए मदद गार हो तो जल की मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों का सुधार होगा अभी देश में ज्यादातर सिंचाई डूब प्रणाली के तहत की जाती है। विशेषता नहरी क्षेत्रों में खेतों को लबालब भर दिया जाता है पौधों को पानी देने हेतु ड्रिप एवं स्पिंकलर प्रणाली को अपनाकर हम पर वन ड्रॉप मोर क्रॉप को सिद्ध कर सकते हैं। डॉ सिंह ने



कहा कि कम पानी चाहने वाली फसलों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। ऐसी फसल प्रणाली अपनाना होगा कि खेत की नमी का पूरा उपयोग हो और फसलों की सिंचाई की क्रांतिक अवस्थाएं जान कर सिंचाई करनी होगी। कुलपति ने कहा हमें जल उपयोग प्रबंधन के साथ जल संरक्षण की ऐसे प्रबंधन अपनाने होंगे जिससे गांव के पानी को गांव क्षेत्र में तथा खेत का पानी को खेत में रोका जा सके। गांव व खेत के तालाबों को इस लायक बनाना होगा कि उसमें एकत्र होने वाला पानी संरक्षित बना रहे। जुलाई,

अगस्त, सितंबर में वर्षा जल के संरक्षण प्रबंधन की जन जागरूकता हेतु विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा समय-समय पर कृषक भाइयों तक तकनीकी पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा भूजल से सिंचाई करने के बजाय वर्षा के पानी का उपयोग क्षमता व प्रबंधन बढ़ाना होगा शुष्क तथा अर्ध शुष्क क्षेत्रों में आज भी आजीविका मुख्य साधन वहां की जल, जमीन एवं जंगल तथा जानवर पर निर्भर है। प्रकृति का स्वरूप विकृत हुआ है। क्योंकि आबादी बढ़ने के साथ आवश्यकताएं भी बढ़ी हैं।



उत्तर मध्य रेलवे



शुद्धि पत्र सं.-6323/Misc

दिनांक:- 04.07.2023

अष्टम शुद्धि पत्र

भारत के राष्ट्रपति की ओर से प्रधान मुख्य सामग्री प्रबन्धक, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज द्वारा जारी ई-प्रापण निविदा सूचना संख्या 23/13 दिनांक 21.02.2023 एवं टेण्डर संख्या 6323RGC02 में निम्नलिखित शुद्धि पत्र जारी किया जाता है।

जल को संरक्षित कर भूगर्भ जल बढ़ाने के लिए जल स्रोतों का पुनरुद्धार: डॉ. आनंद कुमार सिंह

जन एक्सप्रेस | प्रदीप शर्मा

कानपुर नगर। भारत की 70 फीसदी जनसंख्या कृषि पर आधारित है जिसमें कृषि आधारित जल पर 70 फीसदी सिंचाई भूजल के भरोसे है। इसलिए हमें वर्षा जल को संरक्षित कर भूगर्भ जल बढ़ाने के लिए जल स्रोतों का पुनरुद्धार करना होगा। यह बात चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन अपनाकर वर्षा जल का संरक्षण करने संबंधी विषय पर कहीं है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के आगरा, बुलंदशहर, फिरोजाबाद, हाथरस, मैनपुरी, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, शामली, संभल, अमरोहा, जौनपुर, प्रतापगढ़, कानपुर नगर एवं कानपुर देहात आदि जनपदों में भू-जल संकट निरंतर बढ़ता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन और वनों की कमी ने जल की समस्या को बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि हम खेती की जलवायु के लिए मददगार तकनीकी प्रबंधन व पौधों को पानी



देने के लिए ड्रिप एवं स्प्रींकलर प्रणाली को अपनाकर ड्रॉप मोर क्रॉप को सिद्ध कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमें ऐसी फसल प्रणाली को अपनाना होगा जिससे खेत की नमी का पूरा उपयोग हो। उन्होंने कहा कि जल उपयोग प्रबंधन के साथ जल संरक्षण की ऐसे प्रबंधन अपनाने होंगे जिससे गांव के पानी को गांव क्षेत्र में तथा खेत का पानी को खेत में रोका जा सके। कुलपति ने कहा कि खेती में

2050 तक करना पड़ सकता है पानी की कमी का सामना कुलपति

कुलपति ने कहा कि जल संरक्षण के लिए तकनीकी प्रबंधन में रबी फसलों की कटाई के बाद खेत की गहरी जुताई करना, कटी मेड़ों को बांधना, हरी खाद की बुवाई आदि कार्य के साथ जल संरक्षण के लिए मोटी मेड़ छोटे खेत का प्रबंधन अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि विश्व में खेती में इस्तेमाल होने वाली जमीन 52 फीसदी से अधिक जल अपवाह के प्रबंधन सही न होने पर छरित होती है। वर्तमान में पर्यावरण से जुड़ी सभी समस्याएं भारत के लिए सबसे चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण है। वर्ष 2050 तक हमें जल की समस्या और पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है।

जल प्रबंधन के क्षेत्र पर आधारित जल की उपलब्धता विशेष जलवायु को विशेष फसल पद्धति सूक्ष्म सिंचाई, टपक सिंचाई व बौछारई को अपनाना होगा। जिसमें हर बूंद पानी का प्रयोग होता है।

जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन अपनाकर वर्षा जल का करे बेहतर संरक्षण

श्री टी.एन.एन.

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने कहा कि हमारा देश एवं प्रदेश कृषि आधारित है आज भी 70 लाख जनसंख्या कृषि पर आधारित है और कृषि आधारित जल पर जिसमें 70 लाख सिंचाई भूजल के भरोसे है। इसके लिए हमें सबसे पहले वर्षा जल को संरक्षित करने भूगर्भ जल बढ़ाने हेतु रिचार्ज बढ़ाने जल स्रोतों का पुनरुद्धार करना होगा क्योंकि यह सत्य है कि बिन पानी सब सून । उत्तर प्रदेश में आगरा, बुलंदशहर, फिरोजाबाद, हाथरस, मैनपुरी, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर ,शामली, संभल, अमरोहा, जौनपुर, प्रतापगढ़, कानपुर नगर एवं कानपुर देहात आदि जनपदों में भू जल संकट निरंतर बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा जल एवं वायु से ही जलवायु का अस्तित्व है जलवायु परिवर्तन ने जल की समस्या को बढ़ाया है, वनों की कमी पृथ्वी की जल संग्रह संरक्षण क्षमता पर प्रतिकूल असर डालता है परंतु यदि हम खेती की ऐसी तकनीकी प्रबंधन अपनाए जाएं जो जलवायु के लिए मददगार हो तो जल की मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों का सुधार होगा अभी देश में ज्यादातर सिंचाई डूब प्रणाली के तहत की जाती है। विशेषता नहरी क्षेत्रों में खेतों को लबालब भर दिया जाता है पौधों को पानी देने हेतु ड्रिप एवं स्प्रिंकलर प्रणाली को अपनाकर हम ऊपर झोंप मोर क्रॉप को सिद्ध कर सकते हैं।



डॉक्टर आनंद कुमार सिंह कुलपति चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय

डॉ सिंह ने कहा कि कम पानी चाहने वाली फसलों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। ऐसी फसल प्रणाली अपनाना होगा कि खेत की नमी का पूरा उपयोग हो और फसलों की सिंचाई की क्रांतिक अवस्थाएं जान कर सिंचाई करनी होगी। कुलपति ने कहा हमें जल उपयोग प्रबंधन के साथ जल संरक्षण की ऐसे प्रबंधन अपनाने होंगे जिससे गांव के पानी को गांव क्षेत्र में तथा खेत का पानी को खेत में रोका जा सके। गांव व खेत के तालाबों को इस लायक बनाना होगा कि उसमें एकत्र होने वाला पानी संरक्षित बना रहे। जुलाई-अगस्त डिसंबर में वर्षा जल के संरक्षण प्रबंधन की जन जागरूकता हेतु विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के द्वारा समय-समय पर कृषक भाइयों तक तकनीकी पहुंचाने

का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा भूजल से सिंचाई करने के बजाय वर्षा के पानी का उपयोग क्षमता व प्रबंधन बढ़ाना होगा शुष्क तथा अर्ध शुष्क क्षेत्रों में आज भी आजीविका मुख्य साधन वहां की जल, जमीन एवं जंगल तथा जानवर पर निर्भर है। प्रकृति का स्वरूप विकृत हुआ है। क्योंकि आबादी बढ़ने के साथ आवश्यकताएं भी बढ़ी हैं। डॉ सिंह ने कहा कि इन सब संसाधनों एवं उपायों को कारगर बनाने हेतु हमें 3 माह जुलाई, अगस्त, सितंबर में जल संरक्षण एवं रिचार्ज के प्रबंधन को अपनाना होगा जो वर्षा हो उस वर्षा की हर बूंद को अपने खेत क्षेत्र (जलागम क्षेत्र) में संरक्षित करने का प्रबंधन अपनाना होगा। हमारा विश्वविद्यालय जल एवं भूमि संरक्षण के कारगर उपाय हेतु दृढ़ संकल्पित है। उन्होंने किसान भाइयों से अपील की है कि जो जल हमारे पास उपलब्ध है उस जल का 70 लाख उपयोग कृषि कार्य में होता है। अतः हमारी जिम्मेदारी भी अधिक है कि वर्षा जल के संरक्षण के साथ-साथ जल के प्रबंधन एवं सिंचाई दक्षता अपनाना होगा। जल संरक्षण हेतु तकनीकी प्रबंधन में रबी फसलों की कटाई के बाद खेत की गहरी जुताई करना, कटी मेड़ों को बांधना, हरी खाद की बुवाई आदि कार्य के साथ जल संरक्षण हेतु ऊमोटी मेड छोटे खेत

का प्रबंधन अपनाना होगा। विश्व में खेती में इस्तेमाल होने वाली जमीन 52 लाख से अधिक जल अपवाह के प्रबंधन सही न होने पर छरित होती है। वर्तमान में पर्यावरण से जुड़ी सभी समस्याओं में से भारत के लिए सबसे चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण है जल की समस्या वर्ष 2050 तक और पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है। खेती में जल प्रबंधन में क्षेत्र आधारित जल की उपलब्धता विशेष जलवायु को विशेष फसल पद्धति सूक्ष्म सिंचाई, टपक सिंचाई व बौछरई को अपनाना होगा। जिसमें हर बूंद पानी का प्रयोग होता है। उन्होंने कहा देश में जल की कमी से अधिक जल के प्रबंधन की आवश्यकता है जिसको हमारे कृषि विज्ञान केंद्र व विश्वविद्यालय गांव-गांव, खेत-खेत तक तकनीकी पहुंचाने में कार्य कर रहे हैं। माह जुलाई-अगस्त-सितंबर के 90 दिन का प्रबंधन भूजल स्तर को ऊपर उठा सकता है। जिससे हम बाकी आठ नौ माह पीने का पानी कम नहीं होगा। तालाब, पोखर भरे रहेंगे खेतों में नमी संरक्षित रहेगी परंतु 3 माह जल संरक्षण पर सतर्क रहना है यदि हम वर्षा जल को संरक्षित कर ले तो पूरे देश-प्रदेश में जलस्तर बढ़ने के साथ-साथ जल उपलब्धता सुनिश्चित रहेगी।

देश की 70 लाख जनसंख्या कृषि पर आधारित है उत्तर प्रदेश के करीब 15 जिलों में भूजल संकट गहराता जा रहा है

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 13 अंक : 255

कानपुर देहात, बुधवार, 05 जुलाई 2023

Email: sattaexpress@rediffmail.com

सावन के महान म रुद्राक्ष धारण करने गए ह, जो आपका अवश्य कलाई पर रुद्राक्ष पहनाते ह, ता उसमें करना चाहते ह, ता वह हृदय तक भगवान शिव के धरणा में इस आपत फायदा मिलता है।

कानपुर देहात, बुधवार, 05 जुलाई 2023

पृष्ठ- 3

जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन अपनाकर वर्षा जल का करे बेहतर संरक्षणरू कुलपति

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने कहा कि हमारा देश एवं प्रदेश कृषि आधारित है आज भी 70: जनसंख्या कृषि पर आधारित है और कृषि आधारित जल पर जिसमें 70: सिंचाई भूजल के भरोसे है। इसके लिए हमें सबसे पहले वर्षा जल को संरक्षित करने भूगर्भ जल बढ़ाने हेतु रिचार्ज बढ़ाने जल स्रोतों का पुनरुद्धार करना होगा क्योंकि यह सत्य है कि बिना पानी सब सून। उत्तर प्रदेश में आगरा, बुलंदशहर, फिरोजाबाद, हाथरस, मैनपुरी, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, शामली, संभल, अमरोहा, जौनपुर, प्रतापगढ़, कानपुर नगर एवं कानपुर देहात आदि जनपदों में भू जल संकट निरंतर बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा जल एवं वायु से ही जलवायु का अस्तित्व है जलवायु

परिवर्तन ने जल की समस्या को बढ़ाया है, वनों की कमी पृथ्वी की जल संग्रह संरक्षण क्षमता पर प्रतिकूल असर डालता है परंतु यदि हम खेती की ऐसी तकनीकी प्रबंधन अपनाए जाएं जो जलवायु के लिए मददगार हो तो जल की मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों का सुधार होगा अमी देश में ज्यादातर सिंचाई खूब प्रणाली के तहत की जाती है। विशेषता नहरी क्षेत्रों में खेतों को लबालब भर दिया जाता है पीछे को पानी देने हेतु ड्रिप एवं स्प्रिंकलर प्रणाली को अपनाकर हम थर ड्रॉप मोर ड्रॉप को सिद्ध कर सकते हैं। डॉ. सिंह ने कहा कि कम पानी चाहने वाली फसलों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। ऐसी फसल प्रणाली अपनाया होगा कि खेत की नमी का पूरा उपयोग हो और फसलों की सिंचाई की क्रांतिक अवस्थाएं जान कर सिंचाई करनी होगी। कुलपति ने कहा हमें जल उपयोग प्रबंधन के

साथ जल संरक्षण की ऐसे प्रबंधन अपनाने होंगे जिससे गांव के पानी को गांव क्षेत्र में तथा खेत का पानी



को खेत में रोका जा सके। गांव व खेत के तालाबों को इस लायक बनाया होगा कि उसमें एकत्र होने वाला पानी संरक्षित बना रहे। जुलाई-अगस्त ऋतु सितंबर में वर्षा जल के संरक्षण प्रबंधन की जन जागरूकता हेतु

विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के द्वारा समय-समय पर कृषक भाइयों तक तकनीकी पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा भूजल से सिंचाई करने के बजाय वर्षा के पानी का उपयोग क्षमता व प्रबंधन बढ़ाना होगा शुष्क तथा अर्ध शुष्क क्षेत्रों में आज भी आजीविका मुख्य साधन वहां की जल, जमीन एवं जंगल तथा जानवर पर निर्भर है। प्रकृति का स्वरूप विकृत हुआ है। क्योंकि आबादी बढ़ने के साथ आवश्यकताएं भी बढ़ी हैं। डॉ. सिंह ने कहा कि इन सब संसाधनों एवं उपायों को कारगर बनाने हेतु हमें 3 माह जुलाई, अगस्त, सितंबर में जल संरक्षण एवं रिचार्ज के प्रबंधन को अपनाया होगा जो वर्षा हो उस वर्षा की हर बूंद को अपने खेत क्षेत्र (जलागम क्षेत्र) में संरक्षित करने का प्रबंधन अपनाया होगा। हमारा विश्वविद्यालय जल एवं भूमि संरक्षण के कारगर उपाय हेतु दृढ़ संकल्पित

है। उन्होंने किसान भाइयों से अपील की है कि जो जल हमारे पास उपलब्ध है उस जल का 70: उपयोग कृषि कार्य में होता है। अतः हमारी जिम्मेदारी भी अधिक है कि वर्षा जल के संरक्षण के साथ-साथ जल के प्रबंधन एवं सिंचाई दक्षता अपनाया होगा। जल संरक्षण हेतु तकनीकी प्रबंधन में रबी फसलों की कटाई के बाद खेत की गहरी जुताई करना, कटी मेड़ों को बांधना, हरी खाद की बुवाई आदि कार्य के साथ जल संरक्षण हेतु भूटोटी मेड़ छोटे खेतों का प्रबंधन अपनाया होगा। विश्व में खेती में इस्तेमाल होने वाली जमीन 52: से अधिक जल अपवाह के प्रबंधन सही न होने पर छरित होती है। वर्तमान में पर्यावरण से जुड़ी सभी समस्याओं में से भारत के लिए सबसे धिताजनक एवं चुनौतीपूर्ण है जल की समस्या वर्ष 2050 तक और पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है।

खेती में जल प्रबंधन में क्षेत्र आधारित जल की उपलब्धता विशेष जलवायु को विशेष फसल पद्धति सूक्ष्म सिंचाई, टपक सिंचाई व बीछारई को अपनाया होगा। जिसमें हर बूंद पानी का प्रयोग होता है। उन्होंने कहा देश में जल की कमी से अधिक जल के प्रबंधन की आवश्यकता है जिसको हमारे कृषि विज्ञान केंद्र व विश्वविद्यालय गांव-गांव, खेत-खेत तक तकनीकी पहुंचाने में कार्य कर रहे हैं। माह जुलाई-अगस्त-सितंबर के 90 दिन का प्रबंधन भूजल स्तर को ऊपर उठा सकता है। जिससे हम बाकी आठ नौ माह पीने का पानी कम नहीं होगा। तालाब, पोखर भरे रहेंगे खेतों में नमी संरक्षित रहेगी परंतु 3 माह जल संरक्षण पर सतर्क रहना है यदि हम वर्षा जल को संरक्षित कर ले तो पूरे देश-प्रदेश में जलस्तर बढ़ने के साथ-साथ जल उपलब्धता सुनिश्चित रहेगी।

राष्ट्रीय स्वरूप

वर्षा जल का करे बेहतर संरक्षण : कुलपति

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने कहा कि हमारा देश एवं प्रदेश कृषि आधारित है आज भी 70ल जनसंख्या कृषि पर आधारित है और कृषि आधारित जल पर जिसमें 70ल सिंचाई भूजल के भरोसे है। इसके लिए हमें सबसे पहले वर्षा जल को संरक्षित करने भूगर्भ जल बढ़ाने हेतु रिचार्ज बढ़ाने जल स्रोतों का पुनरुद्धार करना होगा क्योंकि यह सत्य है कि बिन पानी सब सूखे उत्तर प्रदेश में आगरा, बुलंदशहर, फिरोजाबाद हाथरस, मैनपुरी, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, शामली, संभल, अमरोहा, जौनपुर, प्रतापगढ़, कानपुर नगर एवं कानपुर देहात आदि जनपदों में भू जल संकट निरंतर बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा जल एवं वायु से ही जलवायु का अस्तित्व है जलवायु परिवर्तन ने जल की समस्या को बढ़ाया है, वनों की कमी पृथ्वी की जल संग्रह संरक्षण क्षमता पर प्रतिकूल असर डालता है

परंतु यदि हम खेती की ऐसी तकनीकी प्रबंधन अपनाए जाएं जो जलवायु के लिए मददगार हो तो जल की मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों का सुधार होगा अभी देश



में ज्यादातर सिंचाई ड्रूप प्रणाली के तहत की जाती है। विशेषता नहरी क्षेत्रों में खेतों को लबालब भर दिया जाता है पौधों को पानी देने हेतु ड्रिप एवं स्प्रींकलर प्रणाली

को अपनाकर हम ऊपर ड्रॉप मोर क्रॉप को सिद्ध कर सकते हैं। डॉ सिंह ने कहा कि कम पानी चाहने वाली फसलों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। ऐसी फसल प्रणाली अपनाना होगा कि खेत की नमी का पूरा उपयोग हो और फसलों की सिंचाई की क्रांतिक अवस्थाएं जान कर सिंचाई करनी होगी। कुलपति ने कहा हमें जल उपयोग प्रबंधन के साथ जल संरक्षण की ऐसे प्रबंधन अपनाने होंगे जिससे गांव के पानी को गांव क्षेत्र में तथा खेत का पानी को खेत में रोका जा सके। गांव व खेत के तालाबों को इस लायक बनाना होगा कि उसमें एकत्र होने वाला पानी संरक्षित बना रहे। जुलाई-अगस्त, सितंबर में वर्षा जल के संरक्षण प्रबंधन की जन जागरूकता हेतु विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा समय-समय पर कृषक भाइयों तक तकनीकी पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है।

जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन अपनाकर वर्षा जल का करे बेहतर संरक्षण.. कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह

दि ग्राम टुडे, बनारस।

(साला सिंह)

पंडोलेखन आचार कुंभ एवं प्रौद्योगिक विभागियोजना बनारस के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह ने कहा कि हमारा देश एवं प्रदेश कुंभ आचारी है।

आज भी 70% जनसंख्या कुंभ पर आचारी है और कुंभ आचारी जल पर निर्भर 70% सिंचाई मुजल के शोरी है। इसके लिए हमें अपनी पारने वर्षा जल को संग्रहित करने और जल बढ़ाये हेतु सिंचाई बढ़ाने जल स्रोती का पुनर्स्थापना करना होगा क्योंकि का मान है कि सिंचाई का जल शुद्ध। इसा प्रदेस में अमरा, कुलुंजकार, पिठोलाकर, हाबान, बैरगुनी, मेरठ, कुलुंजकार, मयरापुर, जयसी, गंगल, अयोध्या, लखनू, प्रयाग, बनारस मार एवं बनारस देहात अति जलपरी में नू जल संकट विरात बढ़ता जा रहा है।

अतएव कहा जल एवं वायु में ही गलतवायु का अस्तिगत है जनसंघु परिवर्तन के जल को समाप्त की बढ़ाया है, अपने की कमी पुनरी की जल स्रोत संरक्षण समन पर प्रतिकूल अमर उठाया है परंतु यदि हम खेती की सही तकनीकी प्रबंधन अपनाए जहाँ जो जलवायु के लिए

आवश्यक हो तो जल को व्यवस्थित एवं सुरक्षित करने का मुजल होगा अपनी देश में व्यवहार सिंचाई युक्त प्रणाली के उतर को जल्दी है। विशेषतः नगरी क्षेत्रों में खेती को समाप्त कर दिया जाता है पीपी को पानी देने हेतु डिप एवं सिंचकाल प्रणाली को अपनाकर हम "ल ड्रीम मीर ड्रीम" को सिद्ध कर सकते हैं। डॉ सिंह ने कहा कि आम जन को पारने अपनी फायली को बढ़ाया देने की आवश्यकता है। (सूची फायल प्रणाली आसन्न होगा कि खेत की जमी का पूरा उपयोग हो और फायली को सिंचाई की अतिवक्त आसन्न) जब कर सिंचाई करनी होगी। कुलपति ने कहा हमें जल उपयोग प्रबंधन के साथ जल संरक्षण की ऐसे प्रबंधन अपनाए डॉ सिंहासे खेत के शोरी को साथ खेड में तथा खेत का पानी को खेत में देकर जल संकट। खेत में खेत के तकनीकी को इस सारकत अमर होगा कि उसी मुकत होने जल पारने परिवर्तन कर रहे। कुलपति आनंद सिंहासे में वर्षा जल के संग्रहण प्रबंधन की उर आवश्यकता हेतु विभागियोजना एवं कुंभ विज्ञान केन्द्रों के उतर समन-समन पर कुंभ का पारने जल तकनीकी पारने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा मुजल के सिंचाई करने के बजाय वर्षा के पानी का



उपरोक्त वक्तव्य में प्रबंधन बढ़ाया होगा शुद्ध तथा अति मुक्त क्षेत्रों में जल की अतिवक्त मुजल समन पारने की जल, अतएव एवं जलक लव अमर पर निर्भर है।

पारने का समाप्त विकृत हुआ है। क्योंकि आसदी पारने के साथ आवश्यकताएं भी बढ़ी हैं। डॉ सिंह ने कहा कि इन सब संकल्पों एवं उपयों को समाप्त करने हेतु वर्षा 3 मल कुलुंज, अमरा, सिंचाई में जल संरक्षण एवं सिंचाई के प्रबंधन को आवश्यक होगा वर्षा को उर वर्षा को हर मुद को अपने खेत देकर, जलवायु क्षेत्र में संग्रहित करने का प्रबंधन आवश्यक होगा। इसका विभागियोजना जल एवं कुंभ संरक्षण के बजाय उठाया हेतु सुरु संकलित है। उन्होंने विज्ञान सभसे से अतिवक्त की है कि जो जल हमारे परम उपयोग है उर जल का 70% उपयोग कुंभ कार्य में होता है। जल हमारी सिंचाई की अधिक है कि वर्षा जल के संग्रहण के साथ-साथ जल के प्रबंधन एवं सिंचाई काय आवश्यक होगा। जल संग्रहण हेतु तकनीकी प्रबंधन में हमें फायली की कसौटी के साथ खेत की कमी कुलुंज कार्य, कटी पीपी को बांधना, हाथ खेत को शुद्ध अति कार्य के साथ जल संग्रहण हेतु "खेती केन्द्र खेती खेत" का प्रबंधन आवश्यक होगा। विशेष में खेती में प्रयोग होने वाली लकरी 0.2%, से अधिक जल उपयोग के प्रबंधन शोरी व होने पर खीर होती है। फायली में परभावक में जुडी

कमी संख्याओं में से भारत के लिए सबसे विश्वसनीय एवं भुवीकृत है जल को समाप्त वर्ष 2020 तक और पारने की कमी का समाप्त कार्य पुरु संकलित है। खेती में जल प्रबंधन में क्षेत्र अचारी जल को उपलब्धता सिंचाई जलवायु की विशेष फायल गड़दि युक्त सिंचाई, एक सिंचाई व खीरवाही को आवश्यक होगा। विशेष हर मुद पानी का प्रयोग होता है। उन्होंने कहा देश में जल की कमी से अधिक जल के प्रबंधन की आवश्यकता है जिसको हमारे कुंभ विज्ञान केन्द्र पर विभागियोजना पाव-पाव, खेती-खेती तक तकनीकी पारने में कार्य कर रहे है। मात्र कुलुंज-अमर-सिंचाई के 90 दिन का प्रबंधन पूजल मन को उर उठा सकता है। जिसमें हम बाकी अमर नई मात्र पारने का पानी कम नहीं होगा। काला, पीछा की खेती खेती में नमी संग्रहित रहेगी परंतु 3 मल जल संग्रहण पर सारकत देना है यदि हम वर्षा जल को संग्रहित कर ले तो पूरे देश-प्रदेस में जलवायु बढ़ने के साथ-साथ जल उपलब्धता सुनिश्चित होगी।



दि ग्राम टुडे

फलों सहि
दि ग्राम
अपने
होने
है सोच
बढ़ाना
की, इस
संस्था

फलों
इसकी

अमर उजाला कानपुर 05/07/2023

वर्षा जल का संरक्षण जरूरी

कानपुर। भारत कृषि प्रधान देश है। इसकी 70 फीसदी जनसंख्या कृषि पर आधारित है। देश में होने वाली खेती में सिंचाई का 70 फीसदी स्रोत भूजल के भरोसे है। ऐसे में हमें वर्षा जल का संचयन करना होगा। ये बातें मंगलवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने कहीं। उन्होंने कहा कि भूजल संकट को रोकने के लिए हमें खेती में ऐसा तकनीकी प्रबंधन अपनाना होगा जिससे पानी का इस्तेमाल कम से कम होगा। पौधों को पानी देने के लिए ड्रिप एवं स्प्रींकलर प्रणाली अपनानी होगी। (संवाद)